TIJER || ISSN 2349-9249 || © November 2019, Volume 6, Issue 11 || www.tijer.org

किशोरों की सृजनात्मकता एवं बुद्धिलब्धि पर सामाजिक आर्थिक स्तर का प्रभाव–एक अध्ययन

डॉ0 नितिन राज वर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर,
महावीर इंस्टीटयूट ऑफ टैक्नोलॉजी, मेरठ।

सार

किसी भी राष्ट्र की प्रगति, समृद्धि एवं उसका अस्तित्व सृजनात्मक अंतर्दृष्टि एवं बौद्धिक कौशलों पर निर्भर करती है। एक किशोर के लिए बौद्धिक व सृजनात्मक क्षमताओं से युक्त होना गर्व की बात है। विद्यालय में शिक्षकों का एवं घर में अभिभावकों का सकारात्मक सहयोग किशोरों में इन दोनों क्षमताओं को विकसित करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। प्रस्तुत अध्ययन किशोरों में सृजनात्मकता एवं बुद्धि लब्धि पर सामाजिक आर्थिक स्तर का प्रभाव ज्ञात करने हेतु किया गया। अध्ययन में समग्र के अन्तर्गत मेरठ शहर के विभिन्न विद्यालयों में अध्ययनरत 500 किशोरों को समग्र के रूप में, सौद्देश्य निदर्शन विधि द्वारा चुना गया। प्रदत्तों के संकलन हेतु बी.के. पासी द्वारा निर्मित पासी का सृजनात्मकता परीक्षण, पी0एन0 मेहरोत्रा द्वारा निर्मित, ''बुद्धि का मिश्रित प्रकार का सामूहिक परीक्षण'' एवं आर0एल0 भारद्वाज द्वारा निर्मित,''सामाजिक आर्थिक स्तर मापनी'' का प्रयोग किया गया। आकड़ों के सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु काई वर्ग परीक्षण प्रयुक्त किया गया। अध्ययन में परिणाम स्वरूप निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर के किशोरों की अपेक्षा उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर के किशोर अधिक सृजनात्मक व उच्च बुद्धि लब्धि वाले पाये गये।

प्रस्तावना

वर्तमान युग में इतने विशाल एवं तीव्र परिवर्तन देखने को मिल रहे हैं जो कि मानव सभ्यता के इतिहास में देखे नहीं गए यह परिवर्तन शैक्षिक, सांस्कृतिक, वैज्ञानिक तथा तकनीकी सभी क्षेत्रों में हो रहे हैं यह भी निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि परिवर्तन की गति भविष्य में और भी तेज हो जाने की संभावनाएं हैं इन तीव्र परिवर्तनों से परिवर्तित होने वाले समाज में व्यक्ति को सुविधा पूर्वक समुचित अभियोजन प्राप्त करना अपेक्षित होगा इस अभियोजन की प्रक्रिया में उसे बुद्धि, चिंतन, मनन, तर्क, निर्णय आदि विभिन्न योग्यताओं का सहारा लेना पड़ेगा जिसमे उक्त सभी योग्यताओं के साथ साथ सृजनात्मकता की भी मुख्य भूमिका होगी जीवन की विभिन्न समस्याओं के प्रति सृजनशील व्यक्ति का दृष्टिकोण असृजनशील व्यक्ति के दृष्टिकोण से भिन्न होता है सृजनशील दृष्टिकोण वाला व्यक्ति समस्याओं के प्रति रुचि रखते हुए समाधान की खोज में जुट जाता है तथा असृजनात्मक दृष्टिकोण वाला व्यक्ति समस्याओं से भागने की कोशिश करता है

कुछ बालकों में उच्च सृजनात्मकता होती है परंतु उनका बौद्धिक स्तर निम्न होता है इसी प्रकार कहा जा सकता है कि जिन का बौद्धिक स्तर उच्च हो उनमें सृजनात्मकता भी उच्च स्तर की होती है उच्च बौद्धिक स्तर और उचित सृजनात्मकता का साथ साथ चलना बाह्य कारकों पर निर्भर करता है बालकों की रचनात्मकता और बुद्धिलब्धि को बहुत से कारक प्रभावित करते हैं जिनमें से मुख्य रूप से सामाजिक आर्थिक स्तर के प्रभाव का अध्ययन किया जा रहा है वैरोन (1965) ने अपने अध्ययनों के आधार पर सिद्ध किया है कि बुद्धि और सृजनात्मकता में धनात्मक सहसंबंध है परंतु यह सह संबंध निम्न स्तर का होता है और सृजनात्मकता और बुद्धि का समन्वय स्वभाविक है।

सृजनात्मकता व बुद्धि किसी भी किशोर के जीवन व राष्ट्र की सफलता के आधार माने जाते हैं। ब्रूनर (1962) कहते हैं कि इस कम्प्यूटर बाहुल्य युग में व्यक्ति की सृजनात्मक व बौद्धिक योग्यताएं उसके सम्मान को वापस लाने में सहायक होगी। पेट्रिक (1995) मानते हैं कि व्यक्तिगत जीवन के दैनिक तनावों से मुकाबला करने के लिए, अपनी जड़ो से जुड़े रहने के लिए मनुष्य में सृजनात्मकता व बौद्धिक कौशलों की आवश्यकता होती है। सृजनात्मक व्यक्ति की एक बड़ी विशेषता बुद्धि है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि सृजनात्मक या रचनात्मक कार्य के लिए बुद्धि आवश्यक है परन्तु सृजनात्मकता के लिए उच्च बुद्धि की आवश्यकता नहीं है। अब तक यही समझा जाता था कि जिस बालक की बुद्धि लब्धि उच्च है, वही प्रतिभाशाली है परन्तु अब प्रतिभा सम्पन्नता के ऐसे पहलुओं में परिवर्तन आया है तथा बुद्धि के साथ–साथ संगीतात्मक एवं कलात्मक गुण, सृजनात्मक लेखन और सामाजिक नेतृत्व की क्षमता को भी उसमें जोड़ा गया है। (बर्ट 1962, बिट्टि 1962)।

किशोरावस्था में बदलते पर्यावरण या वातावरण के साथ बेहतर समायोजन करना जब कठिन हो जाता है, तब सृजनात्मक एवं बौद्धिक चिन्तन तथा अनुकूल मनोसामाजिक वातावरण ही समायोजन स्थापित करने में सहायक सिद्ध होता है। राष्ट्र की विभिन्न समस्याओं तथा संकट पूर्ण स्थितियों में सृजनात्मक तथा बौद्धिक चिन्तन से युक्त किशोर ही नेतृत्व प्रदान कर सकते हैं और समस्याओं के समाधान ढूंढकर राष्ट्र को संकट से उबारते हैं। सैन्फोर्ड (1966) के अनुसार समृद्ध वातावरण के कारण बच्चों की बुद्धि लब्धि बढ़ जाती है। वेलमेन (1980) ने अपने अध्ययन में पाया कि नर्सरी स्कूल के समृद्ध वातावरण में बालकों की बुद्धि लब्धि में .66 की वृद्धि हुई। दमित वातावरण का बाधक प्रभाव बालकों की सृजनात्मकता एवं बृद्धि लब्धि पर पड़ता है। वान अल्सटाइन (1929) के अनुसार बालकों के साथ व्यस्कों के प्रतिदिन रहने की अवधि, रचनात्मक खेल सामग्रियों के व्यवहार का अवसर, परिवार में खेल में साथियों की संख्या तथा बालक के साथ माता–पिता के पढ़ने की अवधि, इन सब का प्रभाव बौद्धिक व सृजनात्मक क्षमताओं पर पड़ता है। सामाजिक आर्थिक स्तर का भी प्रभाव इन पर देखा जा सकता है। उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर वाले बालकों की सृजनात्मकता व बुद्धि निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर के बालकों की अपेक्षा अधिक होती है, क्योंकि उन्हें निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर में बालकों की अपेक्षा अधिक व उपयुक्त अवसर, सुविधाएं व वातावरण प्राप्त होता है।

कक्षा का वातावरण, शिक्षक का व्यवहार, व्यक्तित्व, शिक्षण विधि, विद्यालय में प्रदान की जाने वाली सुविधाएं, गृह वातावरण आदि ऐसे तत्व हैं जो सृजनात्मकता एवं बुद्धि लब्धि को प्रभावित करते हैं। अध्यापकों के द्वारा कक्षा तथा विद्यालय में ऐसा वातावरण उपस्थित किया जाना चाहिए जो छात्रों की क्रियाशीलता के साथ साथ उनके उत्पादक चिंतन, विविधता, मौलिकता तथा नम्यता को प्रोत्साहित करने वाला हो बुड़क एवं बालन (1985) के अनुसार शिक्षक का अधिक तानाशाहीपूर्ण व्यवहार सृजनात्मक शक्ति के विकास में बाधक हैं। बरनन (1964) के अनुसार जो विद्यालय आपके साथी विद्यालयों की अपेक्षा सृजनात्मकता के विकास के लिए अधिक उत्तरदायित्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, उनके विद्यार्थियों की सृजनात्मकता अधिक होती है। इस प्रकार हम देखते हैं कि यदि विद्यालय में शिक्षक व घर में परिवार के सदस्य अपनी परम्परागत, रुढ़िगत भूमिकाओं को त्यागकर किशोरों से मित्रतापूर्ण व अभिप्रेरणा से पूर्ण मार्गदर्शन करे तो निश्चित ही किशोरों की सृजनात्मकता व बुद्धि लब्धि अधिक विकसित होगी।

शोधविधि

प्रस्तुत अध्ययन हेतु निम्नलिखित शोधविधि अपनायी गयी–

अध्ययन के उद्देश्य–प्रस्तुत अध्ययन ''किशोरों में सृजनात्मकता एवं बुद्धि लब्धि पर सामाजिक आर्थिक स्तर का प्रभाव–एक अध्ययन'' हेतु जो उद्देश्य निर्धारित किये गये, वह हैं–

1 किशोरों की सृजनात्मकता का उनके सामाजिक आर्थिक स्तर के मध्य सम्बन्ध ज्ञात करना।

2 किशोरों की बुद्धि लब्धि का उनके सामाजिक आर्थिक स्तर के मध्य सम्बन्ध ज्ञात करना।

अध्ययन की परिकल्पनायें–प्रस्तुत अध्ययन हेतु शून्य परिकल्पनायें निर्धारित की गयी–

1. किशोरों की सृजनात्मकता का उनके सामाजिक आर्थिक स्तर के मध्य कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं होगा।

2. किशोरों की बुद्धि लब्धि का उनके सामाजिक आर्थिक स्तर के मध्य कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं होगा।

अध्ययन का समग्र– प्रस्तुत अध्ययन में समग्र के अन्तर्गत मेरठ शहर में रहने वाले उच्च एवं निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर के 500 किशोरों (आयु 13–16 वर्ष, 250 किशोर लड़के एवं 250 किशोरी लड़कियां) को सम्मिलित किया गया।

निदर्शन पद्धति– प्रस्तुत अध्ययन हेतु सौद्देश्य निदर्शन विधि द्वारा किशोरों का चयन विभिन्न विद्यालयों से किया गया।

उपकरण–प्रस्तुत अध्ययन में प्रदत्तों के संकलन हेतु बी.के. पासी द्वारा निर्मित,''पासी का सृजनात्मकता परीक्षण'', आर.एल. भारद्वाज द्वारा निर्मित, ''सामाजिक आर्थिक स्तर मापनी'' एवं पी.एन. मेहरोत्रा द्वारा निर्मित, ''बुद्धि का मिश्रित प्रकार का सामूहिक परीक्षण'' को उपकरण के रूप में प्रयुक्त किया गया।

सांख्यिकीय विश्लेषण–अध्ययन में आकड़ों के सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु काई वर्ग परीक्षण का उपयोग किया गया।

अध्ययन की सीमायें–प्रस्तुत अध्ययन की निम्नलिखित सीमायें निर्धारित की गई–

1. अध्ययन का क्षेत्र केवल मेरठ शहर के किशोर एवं किशोरियों को रखा गया।
2. अध्ययन में केवल विद्यालीय अध्ययनरत किशोरों को सम्मिलित किया गया।
3. अध्ययन केवल उन्हीं किशोरों पर किया गया, जो उच्च एवं निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर से सम्बन्धित थे।
4. अध्ययन में केवल मापनी एवं मनोवैज्ञानिक परीक्षणों का प्रयोग प्रदत्तों के संकलन हेतु किया गया।

परिणाम एवं विश्लेषण

अध्ययन से प्राप्त परिणाम व उनका विश्लेषण इस प्रकार है–

सारणी क्रमांक –1

किशोरों की सृजनात्मकता का उनके सामाजिक आर्थिक स्तर के मध्य सम्बन्ध

श्रेणियाँ		समाजिक आर्थिक स्तर		सार्थकता स्तर
		उच्च	निम्न	
सृजनात्मकता	निम्न	46	84	0.01 स्तर पर सार्थक
	मध्यम	111	132	
	उच्च	93	34	

काई वर्ग मूल्य = 40.332, मुक्तांश = 2

उक्त सारणी क्रमांक 1 किशोरों की सृजनात्मकता का उनके सामाजिक आर्थिक स्तर के मध्य सम्बन्ध को प्रदर्शित करता है।

सारणी से स्पष्ट होता है कि निम्न सृजनात्मकता के अन्तर्गत 46 किशोर उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर के तथा 84 किशोर निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर के पाये गये। मध्यम सृजनात्मकता के अन्तर्गत 111 किशोर उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर तथा 132 निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर के पाये गये। उच्च सृजनात्मकता के अन्तर्गत 93 किशोर उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर के तथा 34 निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर के पाये गये। सांख्यिकीय गणना में, 2 मुक्तांश पर काई वर्ग मूल्य 40.332 पाया गया, जोकि 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक सिद्ध हुआ। इससे स्पष्ट होता है कि किशोरों की सृजनात्मकता का उनके सामाजिक आर्थिक स्तर के मध्य सम्बन्ध है। अन्य शब्दों में निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर के किशोरों की अपेक्षा उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर के किशोर अधिक सृजनात्मक होते हैं।

पूर्व में किये गये अध्ययनों में, हुसैन एवं अरुण कुमार (1991) तथा काले एवं पुनिया (1994) ने सृजनात्मकता एवं सामाजिक आर्थिक स्तर के मध्य कोई सम्बन्ध नहीं पाया। इसके विपरीत मैक किनॉन (1965), हेलसन (1967), ऑलिव (1972), जरियाल (1979, 1981) तथा पाण्डेय एवं खारकवाल (1993) ने सृजनात्मकता एवं सामाजिक आर्थिक स्तर के मध्य धनात्मक सम्बन्ध पाया।

प्रस्तुत अध्ययन मैक किनॉन (1965), हेलसन (1967), ऑलिव (1972) जरियाल (1979, 1981) तथा पाण्डेय एवं खारकवाल (1993) के शोध अध्ययनों की पुष्टि करता है।

सारणी क्रमांक –2

किशोरों की बुद्धि लब्धि का उनके सामाजिक आर्थिक स्तर के मध्य सम्बन्ध

श्रेणियाँ		समाजिक आर्थिक स्तर		सार्थकता स्तर
		उच्च	निम्न	
बुद्धि लब्धि	निम्न	42	94	0.01 स्तर पर सार्थक
	मध्यम	120	112	
	उच्च	88	44	

काई वर्ग मूल्य = 34.825, मुक्तांश = 2

उक्त सारणी क्रमांक 2 किशोरों की बुद्धि लब्धि का उनके सामाजिक आर्थिक स्तर के मध्य सम्बन्ध को प्रदर्शित करता है।

सारणी से स्पष्ट होता है कि निम्न बुद्धि लब्धि के अन्तर्गत 42 किशोर उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर के तथा 94 किशोर निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर के पाये गये। मध्यम बुद्धि लब्धि के अन्तर्गत 120 किशोर उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर के तथा 112 किशोर निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर के पाये गये। उच्च बुद्धि लब्धि के अन्तर्गत 88 किशोर उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर के तथा 44 किशोर निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर के पाये गये। सांख्यिकीय गणना में 2 मुक्तांश पर काई वर्ग मूल्य 34.825 पाया गया, जोकि 0.01 स्तर पर सार्थक सिद्ध हुआ। अध्ययन में निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर के किशोरों की अपेक्षा उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर के किशोर अधिक बुद्धि लब्धि वाले पाये गये।

पूर्व में किये गये अध्ययनों में, शर्मा (1993) तथा बिल्किस एवं उमा देवी (1999) ने बुद्धि लब्धि एवं सामाजिक–आर्थिक स्तर के मध्य धनात्मक सम्बन्ध पाया। प्रस्तुत अध्ययन शर्मा (1993) तथा बिल्कस एवं उमा देवी (1999) के शोध अध्ययनों की पुष्टि करता हैं

संदर्भ सूची

सुलैमान, मुहम्मद (2003), ''सामान्य मनोविज्ञान'', शुक्ला बुक डिपो, पटना, पृ0 385.

वर्मा, प्रीती एवं श्रीवास्तव डी0एन0 (1996), ''बाल मनोविज्ञान : बाल विकास'' , विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा पृ0 358

मुखर्जी, के (2008), ''शिक्षा मनोविज्ञान'', आगरा पब्लिकेशन, आगरा 2 पृ0 254

गुप्ता, एस0 पी0 एवं गुप्ता, अलका (2007), ''उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान'', शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद पृ0 426

पाण्डेय, राम शकल (2001), ''शिक्षा मनोविज्ञान'', आर0 लाल बुक डिपो, मेरठ पृ0 267

Bilques, & L., Uma Devi (1999), 'Intellectual Abilities of Rural Adolescents', Psycho-Lingua, 29, 137-140.

Kharkwal, K.M. (1993), 'Effect of I.Q on Formal Operational Thought', Psycho-Lingua, 23, 53-56

Kalle, Harnek &. Punia, Tejender Kaur (1994), 'Relationship between Creativily Socio-Economic Status', Experiments in Education, Vol. XXII (2), 35-39.

Hussain Shamshad & Arun Kumar (1991), 'An Investigation in to the creative potentialities of Normal, Physically Handicapped & Problem children,' Indian Journal of Behaviour (oct), 15(4), 1-8

Passi, B.K.; sansanwal, D.N. & Jarial, G.S. (1982), 'Creativity in Education(It's Correlates)', National Psychological Corporation Agra, P-6.

Reddy, T. Rajasekher (2004), 'Creativity in student', Discovering Publishing House New Delhi, P-4-5

Haefele, John W.(1962), 'Creativity & Innovation', New york Reinhold Publishing Corporation, Chapman & Hall, LTD London P-5-6